शोध प्रतिवेदन

"कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यक्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ.शिप्रा गुप्ता
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
संगीता शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना :–

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है उसके हर उद्देश्य के पीछे कुछ ना कुछ उद्देश्य होता है। इस अध्ययन के भी कुछ उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है। परन्तु इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की कार्यक्षमता का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में नारी शिक्षा के बल पर ही आज चार दीवारी की कैद से स्वतन्त्र हो चुकी है। आज नारी उचित कदम उठाकर अपनी रक्षा कर रही है वह पुरूष वर्ग के सामने खड़ी होने में समर्थ हो गयी है। आज नारी हर क्षेत्र में कार्यशील है। आज वे सफल अध्यापिका, प्रधानाध्यापिका, डॉक्टर, अभियन्ता, अधिवक्ता, नर्स, समासेविका, जिलाधिकारी, लिपिक, टेलीफोन ऑपरेटर, विमान परिचारिका, संगीत के क्षेत्र में कार्यरत है। नारी इन सभी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं वह घर तथा बाहर के दानों दायित्वों को निभा रही हैं

कामकाजी नारी के उपर घर व कार्यालय की दोहरी जिम्मेदारी होती है। दोनों ही भूमिका अपने–2 स्थान पर महतवपूर्ण है। किसी को भी नजर अंदाज किये बिना सुचारू रूप से निभाने में अनेक समस्याऐं आती है। इन समस्याओं को

दूर करने में परिवार का सहयोग मिल जाता है तो वह अपने उत्तदायित्व को भली प्रकार निभा सकती है। यदि पारिवारिक वातावरण सहयोगपूर्ण व सहानुभूतिपूर्ण होता है तो उसकी कार्यक्षमता बढ जाती है। वह अपने पारिवारिक दायितवों को आसान से निभा पाती है और कार्यालयी दायित्वों को भी। कामकाजी नारी को दोहरे दायित्व निभाते हुए जीवन में संघर्ष करना पडता है। कभी–कभी घर के दायित्व से भी कार्यक्षेत्रीय दायितव महत्वपूर्ण होता है, तब पति का कर्तव्य होता है कि पत्नी को समझना, उसके कार्य में मदद करना और उसे प्रोत्साहन देना। कार्यक्षेत्र में थककर आई पत्नि को पति की दो मीठी मीठी बातें ही स्वर्ग का सुख देती है।

पति–पत्नी को एक दूसरें को समझना सुखमय दाम्पतय जीवन का रहस्य है। पति–पत्नी में आपसी समझ बूझ के आभाव में व्यक्तिगत मानयताओं को प्रथम स्थान देते है। अतः इससे एक दूसरें को सहयोग देने की बात ही नही उठती है। घर और बाहर भी जिम्मेदारियों को एक साथ ढोना कामकाजी नारी के लिए असंभव है। इस समय वह पति का सहयोग चाहती हैं

कामकाजी पत्नि दोहरी नही, तिहरी भूमिका निभानी पड़ती है पत्नी, माँ, कामकाजी नारी। परिवार और कार्यक्षेत्र का दायित्व सफलतापूर्वक निभाने की होड़ में उसमें तनाव पेदा हो जाता हैं और उसका प्रभाव उसकी कार्यक्षमता पर पड़ता है। वह न तो कार्यालय में अपनी क्षमता का उपयोग कर पाती है और घर में भी वह सही ढंग से अपने उत्तरदायित्व को नही निभा पाती है। अतः एक कामकाजी नारी को सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए पारिवारिक वातावरण का सहयोग आवश्यक होता है तभी वह अपनी कार्यक्षमता का सहीउपयोग कर सकेगी। तभी वह आगे बढ सकेगी और उन्नति कर सकेगी। वह समाज में स्वयं का ओर परिवार का स्थान बना सकेंगी। इससे उसके परिवार की भी प्रतिष्ठा बढेगी, सम्मान बढेगा।

समस्या का औचित्य :–

समाज में आज कामकाजी नारी का सम्मानीय स्थान है। वह घर से बाहर जाकर सक्रिय हो रही है। आज समाज में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो नारी की सीमा एवं योग्यता के बाहर हो। साथ ही नारी ने अपनी घरेलू भूमिका को भी निभाया है। आज भी घर की मुख्य जिम्मेदारी उसकी है। कामकाजी नारी के लिए घर एवं कार्यालय की दोहरी जिम्मेदारी होती है। दोनें ही भूमिकाएँ अपने–अपने

स्थान पर महत्वपूर्ण है। किसी को भी नजर अंदाज किये बिना सुचारू रूप से निभाने में नारी के सामाने अनेक समस्याएँ आती है।

सामान्यतः परिवारजन अक्सर कामकाजी नारी के सम्बन्ध में गैर – कामकाजी नारी सोचती है कि कामकाजी नारी की स्थिति अच्छी है। उसे अतिरिक्त अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त है। किन्तु व्यवहार में कामकाजी नारी पारिवारिक दायित्वों से मुक्त नहीं है। कार्यक्षेत्र से घर आते ही वह एक घरेलू नारी बन जाती है।सभी आवश्यक घरेलू कार्य उसे ही करने पड़ते है। मैं रोजाना सुबह एक अध्यापिका को स्कूल जाते हुए देखती हूँ। उनके पति कार में उन्हें छोडने जाते है। तब उन की अध्यापिका के चहरे पर हँसी को देखकर सोचती हूँ कि क्या पारिवारिक वातावरण के सहयोगपूर्ण हाने पर उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

साथ ही अन्य महिला जो कार्यालय जाती है बहुत थकी–थकी सी लगती है ऐसा लगता है कि कार्यालय जाना उसकी मजबूरी है। वह जिम्मेदारियों के बझ तले दबी हुई है। उसके पारिवारिक वातावरण सहायोग पूर्ण नहीं होने से उसकी कार्यक्षमता में कमी हो रही है।

एक कामकाजी महिला को उसका पारिवारिक वातावरण सहयोग करता है तो अधिक कार्यकुशल कार्य करती है। जब वह अपने कार्यालय से थकी हुई लौटती है तब उसके परिवार के लोग उसकी परिस्थिति को देखते हुए उसका सहयोग करते है तो वह भी अपने परिवारजनों की भावनाओं का आदर करती है उनका सम्मान करती है। वह उनके साथ समय व्यतीत करती है तथा अपने परिवार में अच्छे से समायोजित हो पाती है।

समस्या कथन :

''कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यक्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित है –

- कामकाजी महिलाओं के परिवारिक वातावरण का उनकी कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

- शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी घरेलु कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यालयी कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी सामाजिक कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रयुक्त शोध अध्ययन की परिकलपनाएँ :

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं निर्धारित की गई है –

- कामकाजी महिलाओं के परिवारिक वातावरण का उनकी कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव प्रभाव पड़ता है।
- शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी घरेलु कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव प्रभाव पड़ता है।
- शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यालयी कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव प्रभाव पड़ता है।
- शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी सामाजिक कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव प्रभाव पड़ता है।

1.7 अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि :

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति व प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोगदत्त संकलन हेतु किया गया है।

1.8 अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली का साक्षात्कार (अर्द्धसंरचित) का प्रयोग आकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया।

9 जनसंख्या :

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के शहरी क्षेत्र में विधाधरनगर तथा ग्रामीण क्षेत्र में सायपुरा क्षेत्र को लिया गया है।

10 न्यादर्श :

एक साख्यिंकीय न्यायदर्शन उस सम्पूर्ण समग्र अथवा योग का एक लघु चित्र है। जिससे न्यादर्श लिया गया है। (पी. वी. यंत्र).

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की 100 महिलाओं का चयन किया है।

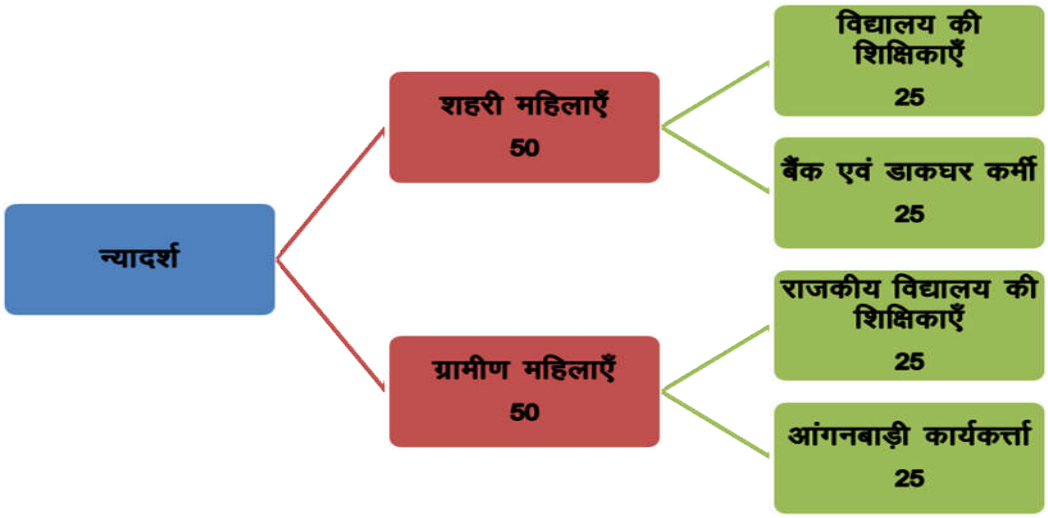

12 अध्ययन के चर :

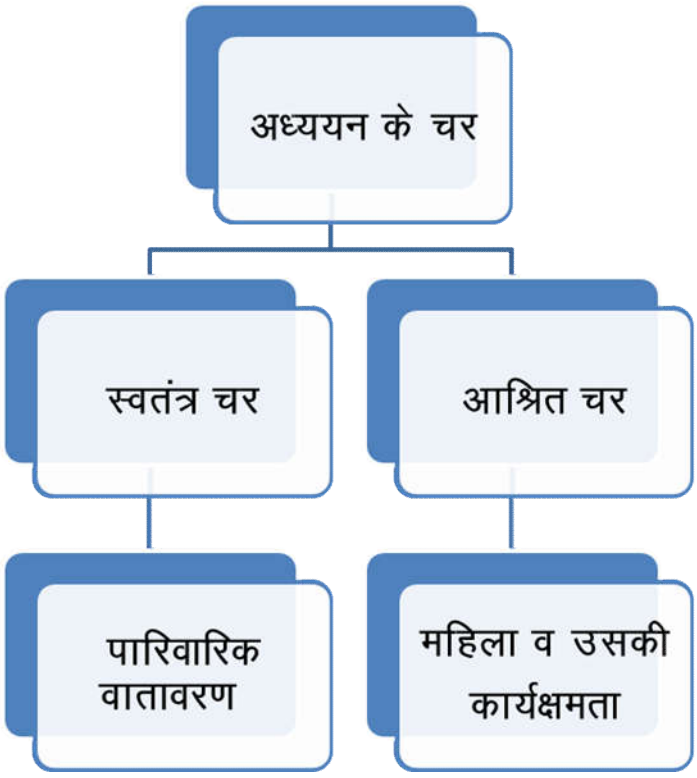

13 प्रदत्तों के स्त्रोत :

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के स्त्रोतों के रूप में जयपुर जिले के राजकीय तथा निजी विद्यालयों, बैंक कर्मियों, कार्यालयों को स्त्रोत के रूप में प्रयोग किया गया है।

14 प्रदत्तों की प्रकृति :–

प्रदत्तों की प्रकृति के रूप में मात्रात्मक प्रकृति व गुणात्मक प्रकृति के प्रदत्तों को प्रयुक्त किया गया है। :

15 परिसीमन :

अनुसंधान के सही परिणाम प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोध क्षेत्रों को एक निश्चित सीमा में बांधा जाए तथा अध्ययन की विश्वसनीयता व वैधता बनाए रखने के लिए भी परिसीमन आवश्यक है।

1. यह अध्ययन राजस्थान के जयपुर जिले के विद्याधर नगर के निजी विद्यालयों, बैंक कर्मियों, डाकघर कर्मियों तथा कार्यालयों में कार्यरत कामकाजी महिलाओं पर किया गया।
2. यह अध्ययन राजस्थान के जयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र सायपुरा में राजकीय विद्यालय तथा आंगनबाड़ी केन्द्र की कामकाजी महिलाओं को लिया गया।

शोध परिणाम एवं निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके निष्कर्ष प्रापत किये गये है। शोध अध्ययन के परिणामस्वरूप कई उपयोगी परिणाम व निष्कर्ष प्राप्त हुए जो निम्न प्रकार है।

1. शोधकर्त्ती द्वारा निर्धारित उद्देश्य कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन के मान का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी–अनुपात का मान 0038 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता 0.05 स्तर पर स्वीकृत है। यहां पर शहरी कामकाजी महिलाओं का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 57.52 तथा 9.089 है तथा ग्रामीण कामकाजी

महिलाओं का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 59.94 तथा 9.720 प्राप्त हुआ है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि महिलाओं को कार्यालय आने जाने के समय में कोई पाबन्धी नहीं है नहीं होती तो वह अधिक कार्यकुशलता से कार्य करती है।

2. शोधकर्त्ती द्वारा निर्धारित उद्देश्य शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी घरेलु कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोधकर्त्ती द्वारा जयपुर जिले की शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं को घरेलु कार्यक्षमता के आधार पर अध्ययन किये जिसमें शहरी महिलाओं व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के मध्यमान व प्रामणिक विचलन के मान का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी अनुपात का मान 0.45 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.5 पर (98) स्तर पर स्वीकृत है।

   यहां पर शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं का घरेलु कार्यक्षमता पर निर्धारित आयाम से प्राप्त मध्यमान व प्रमाणिक विचलन जिसमें शहरी महिलाओं का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन 23.68 तथा प्रमाणिक विचलन 4.29 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण महिलाओं का मध्यनमान 22.68 तथा महिलाओं का मध्यमान 22.68 तथा प्रमाणिक विचलन 3.35 प्राप्त हुआ है। इनमें ज्यादा अन्तर नही है।

   निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी घरेलु कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव में अन्तर नही है। परिवार का उचित सहयोग मिलने पर घर की सभी जिम्मेदारियाँ उठा सकती है। पारिवारिक वातावरण का घरेलु कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है।

3. शोधकर्त्ती द्वारा निर्धारित उद्देश्य शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यालयी कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना था जिसमें शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के कार्यालयी आयाम के आधार पर आयाम निर्धारित किये। जिसमें शहरी महिलाओं का मध्यमान 2 6 तथा प्रमाणिक विचलन 3.44 प्राप्त हुआ तथा ग्रामीण महिलाओं का

मध्यमान 18.8 तथा प्रमाणिक विचलन 3.48 प्राप्त हुआ। इनके मध्यमानों तथा प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी मूल्य 0.089 प्राप्त हुआ जो 0.5 सार्थकता 98 स्तर पर स्वीकृत है। जिसमें आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यालयी क्षमता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः हम कह सकते है कि घर से तनावमुक्त होकर निकली महिला कार्यालय में अपनी क्षमता का उचित समुचित उपयोग कर सकती है। अपना ध्यान कार्य पर केन्द्रित कर सकती हैं।

4. शोधकर्त्ती द्वारा निर्धारित उद्देश्य शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के सामाजिक कार्यक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इसमें अन्तर्गत शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं के कार्यालयी क्षमता पर आयाम निर्धारित करके उनके मध्यमान व प्रमाणिक विचलन निर्धारित किये जो कि शहरी महिलाओं का मध्यमान 14.8 तथा प्रमाणिक विचलन 2.8 प्राप्त हुआ है। ग्रामीण महिलाओं का मध्यमान 14.6 तथा प्रमाणिक विचलन 2.35 प्राप्त हुआ। शहरी व ग्रामीण महिलाओं के मध्यमानों तथा प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी मूल्य 0.54 प्राप्त हुआ जो 0.5 सार्थकता 98 स्तर पर स्वीकृत है।

   जिसमें आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शहरी व ग्रामीण कामकाजी महिलाओं का उनकी सामाजिक कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। परिवार की जिम्मेदारियों से निश्चित होकर वह समाज के कार्यो के लिए समय निकाल सकती है और अपना सामाजिक विकास कर सकती है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत शोध कार्य कामकाजी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का उनकी कार्यालयी कार्यक्षमता पर प्रभाव जानने का लघु प्रयास है।

इस शोध के परिणाम इस तथ्य की ओर इशारा करते है कि पारिवारिक वातावरण का कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। इस शोध कार्य को करने के प्श्चात् यह पता लगा कि यदि परिवार का वातावरण सहयोगपूर्ण है तो कामकाजी महिला की कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है आज की नारी स्वतंत्र है वह बाहर की

जिम्मेदारी के साथ घर के उत्तरदायित्व भी निभाती है इन कार्यो में परिवार का विशेषकर पति का सहयोग मिलता है तो उनका दामपत्य जीवन की सुखपूर्वक रहता हैं

भारतीय समाज पुरूष प्रधान है, प्राचीन संस्कारों से ग्रस्त है। वह लाख प्रयत्न करने पर भी उन संस्कारों से बाहर आने में असमर्थता का अनुभव करता है। उन्हें ऐसा लगता है कि नारी नौकरी कर, परिवार कर दर्जा बढायें लेकिन उसके साथ गृहणी की भूमिका भी शत–प्रतिशत निभायें। कामकाजी नारी भी घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में स्वस्थ और सुन्दर समन्वय बनाने का प्रयास करती है। इस प्रयास में परिवार यदि सहयोग करता है तो वह सामंजस्य सही ढंग से कर पाती है। वह अपने स्वयं के स्वास्थ्य का भी अच्छी तरह से ध्यान रख पाती है तथा कई बिमारियों से बच जाती है। वह अपने कार्यक्षेत्र में भी एकाग्रचित होकर अपनी सेवाऐं दे सकती है।

नारी अर्थोपार्जन करके परिवार का सहयोग करती है, आर्थिक स्थिति मजबूत करती है अपने परिवार को समाज में एक स्तर प्रदान करती है। अतः महिला के कार्य के महत्व को समझना चाहिए।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव :

कोई भी शोध कार्य अपने आप में संपूर्णता लिए नही हो सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य कामकाजी महिलाओं की कार्यक्षमता जानने का लघु प्रयास है भावी शोधकर्त्ता इस सम्बन्ध में अध्ययन के लिए निम्न तथ्यों पर गौर कर सकते है।

1. यह अध्ययन केवल कार्यक्षमता का मापन करने के लिए किया गया है जबकि इस क्षेत्र में अन्य कार्यो जो उसके जीवन से सम्बन्धित है लिये जा सकते हैं
2. इस अध्ययन के लिए केवल तीन आयाम ही लिये गये है। जबकि अन्य आयाम जेसे स्वास्थ्य, आदि को भी लिया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में 100 न्यादर्श लिया गया है कि भावी शोध के लिए न्यादर्श को बढ़ाया भी जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध कार्य केवल जयपुर शहर तक ही सीमित है जबकि जयपुर शहर के अतिरिक्त अन्य शहरों की कामकाजी महिलाओं पर भी किया जा सकता है।

उपसंहार :–

प्रस्तुत शोध कार्य कामकाजी महिलाओं पर किया गया है नारी चाहे कामकाजी हो या गैर कामकाजी नारी का स्थान हमेशा सही सर्वश्रेष्ठ रहा है। क्योंकि नारी ही जननी है उसी से परिवार, समाज, देश का निर्माण होता है। नारी ही अपनी संतान को अच्छे संस्कार देती है। तभी वह संतान आगे जाकर देश व राष्ट्री की सेवा कर पाता है। नारी परिवार का पालन–पोषण करती है।

आज की नारी शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनकर अपना भाग्य स्वयं निर्धारण करने में लगी है। वह पुरूष से स्वयं किसी प्रकार हीन अनुभव नही करती है। समाज के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में आगे बढकर रूढी परंपरागत अबला के मूल्य के स्थान पर सबला नारी के मूल्य की प्रतिष्ठा की है।

दिनोदिन बढती महंगाई के कारण अर्थार्जन करने में वह समर्थ हो गई है। परिवार का भार वहन करने में वह पुरूष की सहायता करती है ओर परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ करती है। परन्तु उसी परिवार का हर एक सदस्य यह आशा रखता है कि वह परंपरागत रूप से अपना दायितव निभायें, वह घर की सारी जिम्मेदारियां उठायें लेकिन यह संभव नही होता है। घर की जिम्मेदारियों में परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग जरूरी होता हैं तभी वह महिला स्वयं को तनावमुक्त करके अच्छी तरह अपनी कार्यक्षमता का उपयोग कर सकती है चाहे वह घरेलु कार्यक्षमता हो, सामाजिक कार्यक्षमता हो, कार्यालयी कार्यक्षमता हो हर जगह अपनी कार्यक्षमता का समुचित उपयोग कर सकती है यदि पारिवारिक वातावरण उसका सहयोग करता हैं।